संस्था में डिसलेक्सिक बच्चों की मदद के लिए आए अभिषेक बच्चन के साथ मंजुला पूजा श्रॉफ और बच्चे

बच्चों के लिए नया कुछ करने की कोशिश

अहमदाबाद की मंजुला पूजा श्रॉफ ऐसे बच्चों के लिए नया कुछ करने उन्हें नया रास्ता दिखाने के लिए प्रयत्नशील हैं जो डिसलेक्सिया के शिकार हैं। इसके लिए उन्होंने डीपीएस प्रेरणा नाम से एक संस्था खोली है जो असंख्य बच्चों के लिए दिशा निर्धारण कर रही है। मंजुला अपनी भूमिका की दृष्टि से वाकई एक मिसाल हैं।

बड़ी हैरानी की बात है कि आज भी बहुत से लोग यह नहीं जानते कि डिसलेक्सिया क्या है, यह क्यों होता है और इसका इलाज क्या है। हम नहीं जानते कि हमारे असंख्य बच्चे जो साधारण से कहीं ज्यादा व विलक्षण बुद्धि के मालिक हैं वे डिसलेक्सिया के शिकार हैं। यह कहना है मंजुला पूजा श्रॉफ का जिन्होंने जब इस समस्या को देखा-समझा तो कोशिश की इसे खोजकर सामने लाने की और इस समस्या का हल ढूंढने की। उनका मानना है कि यदि इन बच्चों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाए तो ये विलक्षण सिद्ध हो सकते हैं। उनके अनुसार बेहद जरूरी है कि इन बच्चों को समय रहते पहचाना जाए। इनमें ऐसा कुछ होता है जिनके द्वारा इन्हें आसानी से मेन स्ट्रीम यानी मुख्यधारा के बच्चों से अलग किया जा सकता है । जब तक आप इन्हें पहचानेंगी नहीं इन्हें सहयोग कैसे कर पाएंगी।

क्या है डिसलेक्सिया

डिसलेक्सिया के शिकार बच्चों को पढ़ने, बोलने व लिखने में परेशानी होती है जो उनकी दिमागी स्थिति सामान्य बच्चों से अलग होने की वजह से होती है। वास्तव में यह बीमारी नहीं है, बल्कि यह वह स्थिति है जो बच्चे के वैज्ञानिक परीक्षण व अध्यापन के सही तरीकों से सामने आती है। वैसे ऐसे बच्चे सामान्य, शारीरिक रूप से ठीक व बुद्धिमान बच्चे होते हैं।

बच्चों की इस समस्या में उनका मस्तिष्क बाएं स्थान पर होने के बजाय सीधे हाथ पर होता है। सामान्य अवस्था में मस्तिष्क बाईं तरफ होता है और उसी के अनुसार शरीर अपना काम करता है। परंतु जब यही स्थिति विपरीत हो जाती है तो शरीर व दिमाग का तालमेल ठीक से बैठ नहीं पाता। ऐसा मस्तिष्क सही तरह से काम करता है। ताजा खोजों ने सिद्ध किया है कि डिसलेक्सिया शारीरिक अलगाव को दिखाता है। इसीलिए इन बच्चों में दाएं बाएं को लेकर मुगालता रहता है। ये **b** व **d** में और **p** व **9** में भी फर्क पहचान नहीं पाते। स्पष्ट रूप से कहें तो ये मिलते-जुलते अक्षरों व संख्याओं को पहचानने में ये अक्सर भूल करते हैं।

कैसे आया संस्था का विचार

शुरुआत में मंजुला ने सामान्य बच्चों के लिए अहमदाबाद में डीपीएस स्कूल की स्थापना की थी। अपने स्कूल में उन्होंने इस बात पर गौर किया कि कुछ बच्चे ऐसे हैं जो बेहद तेज दिमाग के हैं पर वे मुख्यधारा के सामान्य बच्चों के साथ नहीं चल पाते। उन्हें लगा कि यदि इन बच्चों की अतिरिक्त देखभाल की जाए व उचित प्रशिक्षण दिया जाए तो ये अपनी विलक्षण बुद्धि से अपना रास्ता खुद बना सकते हैं। संसार भर में यदि नजर डालें तो स्कूल जाने वाले बच्चों में 15 प्रतिशत बच्चे डिसलेक्सिया के शिकार हैं। अकेले भारत में 30 मिलियन बच्चे डिसलेक्सिया के शिकार हैं। इनके मस्तिष्क का एक हिस्सा पूरे तौर पर काम नहीं करता। इसका यह मतलब नहीं कि डिसलेक्सिया से प्रभावित बच्चे बुद्धिमान नहीं होते। इन बच्चों का रुझान व प्रतिभा किस क्षेत्र में है यह देखकर उनको सही तौर पर प्रशिक्षित करना आवश्यक होता है। इसी सोच ने पूजा को बाध्य किया कि वह इन बच्चों के लिए एक अलग प्लेटफार्म उपलब्ध कराएं जिससे भटकने व जी चुराने के बजाय बच्चे अपने लिए दिशा निर्धारण कर सकें। इसी उद्देश्य से उन्होंने केलोरेक्स फाउंडेशन के तहत डीपीएस प्रेरणा नामक एक नये स्कूल की शुरुआत की। दो बच्चों से आरंभ हुआ यह स्कूल आज असंख्य बच्चों के लिए दिशा निर्धारण कर रहा है। इसका काम बच्चों की सीखने से संबंधित दिक्कतों को दूर कर उनकी पढ़ाई के आसन तरीकों का विकास करना है। ये बच्चे इन कामों में अक्सर बेहतरीन होते हैं:

- डिस्कशन या बातचीत में खुलकर हिस्सा लेते हैं।
- सामाजिक रूप से इनका व्यवहार अच्छा व हंसमुख होता है।
- इनका बोलचाल अच्छा होता है।
- मशीनी चीजों में दिलचस्पी होती है।
- अन्य क्षेत्रों में ज्यादा प्रतिभा होती है।

ब्रिटेन में किए गए अध्ययन के अनुसार जो अरबपति अपने दम पर कामयाबी पा सके हैं उनमें अधिकतर डिस्लेक्सिया के शिकार थे।

आ सकते हैं नए आइंस्टाइन सामने

मंजुला ने आगे बताया, 'हमारे सामान्य बच्चों के स्कूल में 13 साल का बच्चा ब्रह्मज्योत था। सातवीं कक्षा में फेल होने पर उसे स्कूल से निकाल देने का फैसला लिया गया। मैंने स्वयं उसकी मां को बुलाकर समझाया और उसे प्रेरणा में पढ़ाने का सुझाव दिया। पहले तो उसकी मां को ये पसंद नहीं आया पर बाद में कोई और उपाय न देख उन्होंने उसे प्रेरणा में दाखिल कराया। तीन साल के अंदर ही उसने सबको अपनी विलक्षण बुद्धि से चकित कर दिया। एक प्रदर्शनी में उसने प्रदूषण रहित ईंधन का एक मॉडल बनाया । स्पेन से आए वैज्ञानिक उसके इस प्रयोग को देख हतप्रभ रह गए। उनका कहना था कि यह काम जो इस बच्चे ने किया वह हम वैज्ञानिकों के लिए भी संभव नहीं था। वे उसे अपने साथ स्पेन ले गए। हमें लगता है कि यदि इस पर ध्यान से काम

किया जाए तो एक नहीं अनेक नन्हे आइंस्टाइन निकलकर सामने आ सकते हैं। प्रेरणा डीपीएस का काम ऐसे बच्चों को एक प्लेटफार्म देना है जिससे वे कामयाबी पा सकें।

प्रेरणा की शुरुआत

डीपीएस प्रेरणा की शुरुआत अहमदाबाद में आज से चार साल पहले हुई थी। दो बच्चों से आरंभ हुआ यह स्कूल आज 80 की संख्या पूरी कर चुका है। फिर भी असंख्य बच्चों को डिसलेक्सिया के शिकार देखते हुए यह संख्या बहुत कम है। मंजुला का कहना है कि लगातार प्रयासों व सीमित साधनों के चलते हम जो भी कर पाते हैं यथासंभव कर ही लेते हैं। यदि गिनती के बच्चों को भी सही मार्गदर्शन व दिशा दे पाएं तो यह भी संतोषजनक बात है।

केलोरिक्स फाउंडेशन के नाम से आरंभ किए गए डीपीएस प्रेरणा स्कूल का काम ऐसी शिक्षा प्रणाली को उपलब्ध कराना है जिससे इन बच्चों की शिक्षा की राह में आने वाली कठिनाइयां दूर हो सकें और उनके व्यक्तित्व का विकास सही ढंग से हो सके। ये बच्चे स्लो लर्नर नहीं होते बल्कि ये साधारण से ज्यादा या बहुत ज्यादा बुद्धिमान होते हैं। इस तरह के चीजों को समझ सके। यदि अभिभावक सहायता करें तो स्कूल में आने वाली समस्याओं से भी छुटकारा मिल जाएगा। यह याद रखना बेहद जरूरी है कि आप जितना अपने बच्चे को जानती व समझती हैं उतना और कोई नहीं समझ पाएगा। आपको आकर यह कौन कहेगा कि चिंता मत कीजिए सब ठीक हो जाएगा, यह ठीक करने की जिम्मेदारी सिर्फ आप ही की है। यदि कभी भी आपको लगता है कि कुछ गड़बड़ है तो तुरंत तह तक जाइए और समस्या का पता लगाइए।

अल्बर्ट आइंस्टाइन शुरू से ही स्लो लर्नर थे। उनके अलावा लुई पास्चर स्कूल में स्लो थे व बीथोवेन के अध्यापक उन्हें बेकार व निराशापूर्ण कहते थे। ये वे प्रसिद्ध लोग रहे हैं जिनकी कुछ चीजें सर विंस्टन चर्चिल, वॉल्ट डिज्नी व थामस एडिसन जैसे जीनियस लोगों से मिलती थीं। ये जो विशेष दिमाग व खास शख्सियत के मालिक थे पर शायद यह बात कम लोग ही जानते होंगे कि ये सभी डिसलेक्सिया के शिकार थे। इसलिए घबराइए नहीं बल्कि धैर्यपूर्वक इनका सामना करिए, हो सकता है कि इन्हीं नामों में एक नाम आपके

इन बच्चों की विशेषताओं को बाहर लाया जा सके और उन्हें सामान्य बच्चों के साथ पढ़ाया जा सके। यदि ये बच्चे समाज की मुख्यधारा में नहीं भी शामिल होते तो भी इनके लिए उपयुक्त क्षेत्र ढूंढने की जिम्मेदारी हमारी है।

क्या तरीका है इनका

पूजा इन तरीकों के माध्यम से डिसलेक्सिया पीड़ित बच्चों को प्रशिक्षित करती हैं:

- फ्लो चार्ट द्वारा
- स्लाइड्स से
- ताश के पत्तों से
- शैक्षणिक टूर पर ले जाकर
- कंप्यूटर द्वारा
- प्रोजेक्ट पर आधारित कार्यक्रम द्वारा
- एक समय में सीमित जानकारी देकर
- इन बच्चों की कमियां गिनाने के बजाय उनसे उनकी समस्या पर बात कर उन्हें सुलझाने की कोशिश करके।
- विस्तार से पढ़ाकर ताकि वे अपने लक्ष्यों को समझ कर उसके अनुसार अपनी योजना बना पाएं और उनके काम आसान हो पाएं।

पूजा श्रॉफ के प्रयासों का यह नतीजा है कि न केवल लोगों में इस तरफ जागरूकता

डीपीएस प्रेरणा स्कूल का काम ऐसी शिक्षा प्रणाली को उपलब्ध कराना है जिससे इन बच्चों की शिक्षा की राह में आने वाली कठिनाइयां दूर हो सकें और वे सही व्यक्तित्व को प्राप्त कर सकें

बच्चों को मनोचिकित्सक की राय की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। ऐसे बच्चे आपसी प्रेम व सौहार्द से निर्देशों को ज्यादा बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। इनको सुधारने के लिए बहुत धैर्य की जरूरत होती है।

भूमिका अभिभावकों की

इस तरह के बच्चों की देखभाल में सबसे मुख्य भूमिका अभिभावकों की होती है, उन्हें चाहिए कि सबसे पहले वे अपने बच्चे को ठीक से देखें-समझें इसके बाद परेशानी पहचान लेने पर अपने बच्चे की हर संभव सहायता करें ताकि वह आसान तरीके से पढ़ाई कर सके और

बच्चे का हो।

ऐसे बच्चों को विशेष भावनात्मक सहयोग व दिशा-निर्देश की जरूरत होती है। ऐसे बच्चों के प्रति पहली जिम्मेदारी माता-पिता और शिक्षकों की है। इन दोनों की घनिष्ठता पर ही इन बच्चों का विकास निर्भर करता है। इस संस्था द्वारा इन बच्चों की बुनियादी जरूरतों पर ध्यान दिया जाता है। दूसरी जिम्मेदारी समाज की बनती है कि ऐसे बच्चों के शिक्षक, पास-पड़ोस में रहने वाले लोग और रिश्तेदार इनकी समस्याओं को समझते हुए इनका मजाक न उड़ाएं और हर तरह से सहायता करें। पूजा का कहना है कि हमारी हरदम कोशिश होती है कि

आई है बल्कि सीबीएससी ने भी बोर्ड की परीक्षाओं में इन बच्चों को अधिक समय व एक सहायक देने की व्यवस्था कर दी है, जो इन बच्चों की सबसे बड़ी समस्या होती है। यदि समय रहते इन्हें सहयोग नहीं दिया गया तो ये अपने जीवन में पिछड़ते चले जाएंगे और इनके अंदर जो भी जिस क्षेत्र में आगे बढ़ने की काबिलियत है वह सामने नहीं आ पाएगी। विलक्षण को खोजना व सामने लाना आसान काम नहीं होता है, इसके लिए लगातार प्रयास करने होते हैं तब ही कोई आइंस्टाइन बनकर सामने आता है।

प्रीति सेठ